

ईश्वरीय  
खजाना  
टीम  
*Presents*

# विशेष पुरुषार्थ

तीव्रता से आगे बढ़ने की श्रेष्ठ युक्तियां

यह श्रेष्ठ पुरुषार्थ की  
भिन्न भिन्न युक्तियाँ  
बाबा की रोज  
जैसे मीठी थपकी है  
अन्तर्मन में  
जो समा ले इसे  
जीवन में उसकी सफलता  
शत प्रतिशत पक्की है...



**\*मंसा सेवा के मोती\***



**\*मैं श्रेष्ठ आत्मा परमपिता परमात्मा की  
छत्रछाया के नीचे बैठकर यह शुभ संकल्प  
करती हूं कि-\***



**\*शिव बाबा संसार की समस्त आत्माएं हृद की  
इच्छाओं से मुक्त हो सदा बेहद की स्थिति में  
रहें।\***

**!! \*ओम शांति\* !!**



**\*( यह सेवा दिन में कई बार करना है )\***

# SAMARPAN



माया भी चतुर है। पहले सर्वशक्तिवान बाप से बुद्धि को दूर करती है, फिर जब कमजोर बन जाते हैं तब वार करती है। कोई भी साथ नहीं रहता है। क्या भी हो जाये - अपनी बुद्धि को कभी बाप के साथ से दूर न करना। जब किसका वार होता है तो उनसे कैसे अपने को बचाने लिए चिल्लाते हैं, घमसान करते हैं जिससे कोई दूर न ले जा सके। यहां फिर जब देखो कि माया हमारी बुद्धि की लगन को बाप से दूर करने की कोशिश करती है, तो अपने अन्दर बाप के गुण गाने हैं, महिमा करनी है। महान्! कर्तव्य करने लग जाओ, चिल्लाओ नहीं। भक्ति में भी गुणगान करते हैं ना। यह यादगार भी कब से बना? यह मन्सा का गुणगान करना वाचा में ला दिया है। यथार्थ रीति से गुणगान तो आप ही कर सकते हो ना। अब यथार्थ रूप में मन्सा संकल्प से, स्मृति-स्वरूप में गुणगान करते हो और भक्ति में स्थूलता में आते हैं तो मुख से गाने लग पड़ते हैं। सभी रीति- रस्म शुरू तो यहां से होती हैं ना। तो गुणगान करने लग जाओ। अपने को अधिकारी समझ सर्व शक्तियों को काम में लाओ। फिर कब भी माया आपकी बुद्धि की लगन को दूर नहीं कर सकेगी। न दूर होंगे, न कमजोर होंगे, न हार खायेंगे। फिर सदा विजयी होंगे। तो यह स्तोगन याद रखना कि हम अनेक बार के विजयी हैं, अब भी विजयी बनकर ही दिखायेंगे। जो अनेक बार के विजयी हैं वह अभी फिर हार खा सकते हैं क्या? कभी नहीं। हार खाना असम्भव अनुभव होना चाहिए। जैसे अज्ञानी आत्माओं को विजय पाना असम्भव अनुभव होता है ना। समझते हैं - विजयी बनना हो भी सकता है क्या? तो जैसे अज्ञानी के लिए विजयी बनना असम्भव है, इस प्रकार ज्ञानी आत्मा को हार खाना असम्भव अनुभव होना चाहिए। ऐसे विल-पावर अपने में भरी है? अपने को सर्व समर्पण किया? सर्व समर्पण उसको कहा जाता है जिसके संकल्प में भी बाडी-कानसेस न हो, देह-अभिमान न हो। उसको कहा जाता है सर्व समर्पण। अपने देह का भान भी अर्पण करना है। मैं फलानी हूँ - यह संकल्प भी अर्पण हो। उसको कहते हैं सर्व समर्पण, सर्व गुणों से सम्पन्न। सर्व गुणों से सम्पन्न को ही सम्पूर्ण कहा जाता है। कोई भी गुण की कमी नहीं। अभी तो वर्णन करते हो ना कि यह कमी है। इससे सिद्ध है कि सम्पूर्ण स्टेज नहीं है। तो सर्व गुण सम्पन्न हैं? तो लक्ष्य यही रखना है कि सर्व समर्पण बनकर सर्व गुण सम्पन्न बन सम्पूर्ण स्टेज को प्राप्त करेंगे ही। ऐसे पुरुषार्थियों को बाप भी वरदान देते हैं कि 'सदा विजयी भव'। हर संकल्प में कमाल दिखाओ यही विशेषता दिखाओ - जीवन का फैसला कर आई हो ना? अपने आप से फैसला करके आई हो। कोई भी संस्कार के वश नहीं होना। जो हैं ही जगतजीत, विश्व के विजयी वह किसके भी वश हो नहीं सकते। जो स्वयं सर्व आत्माओं को नजर से निहाल करने वाली हैं, उनकी नजर और कहां भी नहीं जा सकती।  
ऐसे दृढ़ निश्चयबुद्धि हो?--04-03-1972

*Vidhi Se Siddhi*

# सभी बच्चों प्रति बापदादा का एक ही श्रेष्ठ संकल्प

बापदादा- 15-11-2011

बापदादा अभी सभी बच्चों को एक ही श्रेष्ठ संकल्प सुनाने चाहते हैं कि अभी स्वयं भी निर्विघ्न रहो और अपने साथियों को, सम्बन्ध में आने वालों को भी निर्विघ्न बनाओ। समय को समीप लाओ। दुख और अशान्ति बापदादा बच्चों का देख नहीं सकता। अभी अपना राज्य जल्दी से जल्दी धरनी पर लाओ। बापदादा को हर बच्चा प्यारा है, लास्ट नम्बर बच्चा जो है वह भी प्यारा है क्योंकि कमजोर है ना। तो कमजोर पर और ही रहम ज्यादा आता है। आप सभी भी कैसी भी स्थिति वाला, स्वभाव वाला हो लेकिन हमारा है, जैसे बाप हमारा है, वैसे परिवार हमारा है, तो उसके स्वभाव संस्कार न देख उनको और ही सहयोग दो, सद्भावना दो, शुभ भावना दो।

ओम् शान्ति

# हर एक सेन्टर पर अटेन्शन थोड़ा ज़्यादा चाहिये

**बापदादा- 15-11-2011**

हर एक अपने ज़ोन जैसे यहाँ रहते वह विदेश में कर सकती है, वैसे हर एक जोन इन्चार्ज अपने ज़ोन की इतनी सम्भाल करते रहें, हर एक सेन्टर का रिकार्ड पूछते रहने से पता पड़ेगा कि कैसे है, कम से कम हर मास में एक दो बारी जो जोन हैं उसको अपने सेवाकेन्द्रों का पता करना चाहिए, चाहे अपने साथी बना दो। एक दो नहीं कर सकेंगे लेकिन अपने साथी बना दो वह साथी आपको रिपोर्ट देवे। अभी समय नाजुक आ रहा है ना इसलिए अटेन्शन थोड़ा ज़्यादा चाहिए।



ओम् शान्ति

## अव्यक्त शिक्षाएँ



स्व की विशेषता द्वारा विशेष कार्य में रहना अर्थात् अपनी विशेषता का सिर्फ मन में वा मुख से वर्णन नहीं करना लेकिन विशेषता द्वारा कोई विशेष कार्य कर दिखाना। जितना अपनी विशेषता को मंसा सेवा वा वाणी और कर्म की सेवा में लगायेंगे तो वही विशेषता विस्तार को पाती जायेगी। सेवा में लगाना अर्थात् एक बीज से अनेक फल प्रगट करना।

**"I am a WISE BEING.**

Past has passed ... full stop.

It's over ... full stop.

It was a consequence of my past karma.

It's over ... never to happen again.

I see every scene and person today

With a fresh perspective.

**I see people with a clean mind.**

**I begin a new, pure karmic account."**



BKShivani





People can be rude to me,  
can cheat me,  
But no one has the power to hurt me.  
Hurt is the pain I feel, because  
Of what I Say to Myself  
In response to their behavior.

It's not their words or behavior  
It's my thoughts which cause the pain.  
I Hurt myself... I can Heal myself.



## **Brahma Kumaris Websites**

Main BK website [www.shivbabas.org](http://www.shivbabas.org) OR  
[www.brahmakumari.org](http://www.brahmakumari.org) (by SBS team)

Int'l website: [www.brahmakumaris.org](http://www.brahmakumaris.org)

India website: [www.brahmakumaris.com](http://www.brahmakumaris.com)

BK Sustenance website:  
[www.bksustenance.net](http://www.bksustenance.net)

All Data hosted on [www.bkdrluhar.com](http://www.bkdrluhar.com)

Murli Websites: [babamurli.net](http://babamurli.net)  
and [madhubanmurli.org](http://madhubanmurli.org)

[www.omshantimusic.net](http://www.omshantimusic.net)

[www.bkgoogle.org](http://www.bkgoogle.org)

[www.bksewa.org](http://www.bksewa.org)

[www.bkinfo.in](http://www.bkinfo.in)

[www.bk.ooo](http://www.bk.ooo)

[www.brahmakumari.org/centres](http://www.brahmakumari.org/centres)

NEW

[www.IshvariyaKhajana.BKhq.org](http://www.IshvariyaKhajana.BKhq.org)